Renu Bala et al. International Journal of Recent Research Aspects ISSN: 2349-7688, Vol. 1, Issue 3, December 2014, pp. 163-167

गबन में नारी

रेणु बाला

हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी कुरुक्षेत्र

सारांश: प्रेमचंद द्वारा रचित गबन उपन्यास एक सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने मध्यवर्गीय समाज में व्याप्त आभूषण.प्रियता तथा प्रदर्शन.प्रियता के दोषों को उजागर किया है। यहाँ नारी पात्रों को सरल तथा विकट परिस्थितियों के अनुसार चित्रित किया है। नारी जो एक समय आभूषण.प्रियता तथा प्रदर्शन.प्रियता पसंद करती हैए वही विकट परिस्थितियों के आने पर अपनी सूझ.बूझ से समस्या का हल करती है। जालपा अपने पति को गबन के आरोप में बचाती है तथा झूठी गवाही देने से भी बचाती है। रतन अनमेल विवाह तथा विधवा समस्या से जूझती है। जोहरा वेश्यावृत्ति से निकल कर एक साधारण जीवन चुनती है। परिस्थितियाँ यथार्थ से आदर्श की ओर चलती है। अतः सम्पूर्ण उपन्यास को नारी पात्रों के माध्यम से ही दर्शाया गया है।

मुख्य विषय तत्कालीन समाज में व्याप्त कुरीतियाँ परिस्थितियाँए जालपा रतन तथा जोहरी का चरित्र.चित्रण।

हिन्दी उपन्यासकारों में मुंशी प्रेमचंद को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। प्रेमचंद आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी उपन्यासकार है। उन्होंने अपनी रचनाओं का विषय समाज में व्याप्त कुरीतियों तथा विषमाओं का वर्जन और निवारण लिया है। उनकी एक.एक रचना भारतीय जन.जीवन का विशेषतया ग्रामीण जीवन का दर्पण है। इसी श्रृंखला में गबन प्रेमचंद का प्रमुख सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास का उद्देश्य मध्य.वर्गीय समाज में व्याप्त आभूषण.प्रियताए मिथ्या. आडम्बरए अनमेल विवाहए विधवा समस्याए रिश्वतखोरी तथा दूषित न्याय.व्यवस्था आदि का उल्लेख करना है। इस उपन्यास के कथानक और घटनाओं की योजना इस प्रकार से की गई है कि उसके आदि से अंत तक रोचकता एवं जिज्ञासा बनी रहती है। कथानक में पात्रों के परिस्थितियों के साथ घात.प्रतिघात के कारण यहाँ कथानक में कौतूहल उत्पन्न होता है। इस उपन्यास की कथा मुख्य पात्र जालपा तथा उसके पति रमानाथ के इर्द.गिर्द ही घूमती है। जालपा के अतिरिक्त अन्य नारी पात्रए रतनए जोहराए रामेश्वरी तथा जग्गो हैं।

1ण आभुषण.प्रियता रू जालपा यहाँ मुख्य नारी पात्र है। जालपा दीनदयालए जो जमींदार के मुख्तयार हैए कि इकलौती संतान है। उसे बचपन से ही आभूषणों से प्रेम था। बचपन में बिल्लौरी हार ही उसका पंसदीदा खिलौना था। जालपा का बचपन ऐसे वातावरण में बीता जहाँ सदा गहनों को अधिक महत्व दिया जाता था। उसे बताया गया कि चन्द्रहार तो उसकी ससुराल की ओर से आएगा। विवाह में चन्द्रहार न मिलने पर वह बहुत निराश हुई तथा वह अपने पति रमानाथ को बार.बार चन्द्रहार लाने को कहती। घर में भी अच्छा व्यवहार नहीं करती तथा एकांत में मौन बैठी रहती। साधारणतः नारी में आभूषण.प्रियता सहज स्वाभाविक प्रवृति होती है। जालपा का यहाँ दोहरा व्यक्तित्व दिखाई देता है। पहले उसमें जो आभूषण.प्रियताए घर के प्रति अरूचि तथा कुंठा के भाव थेए वे समय के साथ चले जाते हैं। वह विकट परिस्थिति में स्वयं अपने गहने बेचकर दफ्तर में रुपये जमा करवाती है तथा रमानाथ को गबन के केस में बचाती है। इन पंक्तियों से जालपा की आभूषण.प्रियता झलकती है. ष्उसने हार गले में पहनाए शीशफूल जूड़े में सजाया और हर्ष से उन्मत्त होकर बोली. तुम्हें आशीर्वाद देती हूँए ष्ईश्वर तुम्हारी सारी मनोकामना पूर्ण करे।ष्

© 2014 IJRRA All Rights Reserved

दूसरी और रतना भी आभूषण.प्रेमी नारी है। वह धनी वकील की पत्नी है। वह तुरन्त कोई भी आभूषण ले लेती है। वकील साहब भी तुरंत उसकी फरमाइश पूरी कर देते है। वह कभी कंगन खरीद लेती हैए कभी हार ले लेती है। लेकिन वह रुपयों का घमंड कभी नहीं करती।

2ण सहृदयता रू जालपा एक सहृदय नारी है। वह अपने सरल स्वभाव के कारण ही रमानाथ की झूठी बातों में आ जाती है तथा अपने परिवार को बहुत अमीर समझने लगती है। इसी कारण वह चन्द्रहार के लिए जिद करती है। वह गहनों की चोरी वाली बात को भी सच मान लेती है। वह अपने पति से प्रेम करती है। वह रमानाथ को सब सच बतलाती है तथा उससे भी बार.बार सच बतलाने और दोनों के बीच परदा न रखने के लिए कहती है।

ष्अगर तुम्हे मुझसे सच्चा प्रेम होता तो तुम कोई परदा न रखते। तुम्हारे मन में जरूर कोई ऐसी बात हैए जो तुम मुझसे छिपा रहे हो। कई दिनों से देख रही हूँए तुम चिंता में डूबे रहते हो। मुझसे क्यों नहीं कहतेः जहाँ विश्वास नहीं हैए वहाँ प्रेम कैसे रह सकता है।ष्2

रतना भी सरल युवती है। वह घमंड से कोसों दूर है। रतना सब की मुसीबत में मदद करती है। रतना को बच्चों से बहुत लगाव है। वह अपने बगीचे में बच्चों के साथ समय व्यतीत करती है। जालपा की अंतरंग सखी है। दोनों अपनी व्यथा एक.दूसरे से खुलकर बताती है। दोनों अपने गम भूलाने के लिए चक्की पीसते हुए गाने लगती है। ष्मोहि जोगिन बना के कहां गये रे जोगिया।ष्3

जोहरा पेशे से वेश्या है तथा पेशे के अनुसार ही उसका व्यवहार है। वह दरोगाए इन्सपेक्टर आदि का मनोरंजन करती हैए लेकिन जब रमानाथ तथा जालपा से मिलती है तो उनकी सहृदयता व निश्छलता को देखकर स्वयं को बदल लेती है। वह रमानाथ को दरोगा से बचाती है। वह रतन की भी मित्र बन जाती है तथा किसी अनजान स्त्री को नदी मे डूबता देखकर उसे बचाने के लिए स्वयं नदी मे कूद गई तथा अपनी जान गंवा दी।

3ण पातिव्रत्य रू जालपा तथा रतन दोनों पतिव्रता स्त्री है। जालपा अपने पति से बहुत प्रेम करती है। जब रमानाथ कलकत्ता चला जाता है तो वह बहुत निराश हुई लेकिन वह रमानाथ का पता लगाकर वहाँ पहुँच जाती है तथा रमानाथ को मुसीबत से निकालती है। रतना का विवाह साठ वर्ष के धनी वकील इन्द्रभूषण से होता है लेकिन वह कभी अपने पति की बुराई नहीं करती। वह भारतीय पतिव्रता नारी के रूप में चित्रित हुई है। ष्अगर कोई मेरा सर्वस्व लेकर भी इन्हें अच्छा कर दें कि इस बीमारी की जड़ टूट जावेंए तो मैं खुशी से दे दूंगी।ष्4

वह अपने पति को उपचार के लिए कलकत्ता लेकर जाती है। उसे बचाने का हर संभव प्रयास करती है तथा जी. जान से उसकी सेवा करती है। रतन का अनमेल विवाह है लेकिन वह कुंठित नहीं हुई। उसने पराये मर्द की तरफ कभी भी गलत नजर से नहीं देखा। वह दूसरों के प्रति सहानुभूति रखती है। जालपा से कहती हैए ष्मुझे तो उन पर दया आती हैए अपने से जहाँ तक हो सकता हैए उनकी सेवा करती हूँ। आखिर वह मेरे लिए ही तो अपनी जान खपा रहे है।ष्5

जोहरा भी रमानाथ से प्रेम करती है तथा जालपा को वापिस प्रयाग लौटा कर हमेशा के लिए रमानाथ के साथ रहना चाहती हैए लेकिन जब वह जालपा से मिलती है तो वह उसके व्यक्तित्व से आकृष्ट हो जाती है तथा उसकी मदद करती है। जोहरा अंजान स्त्री को बचाने के लिए रमानाथ को मना करके खुद जाती है और अपना जीवन न्योछावर कर देती है।

© 2014 IJRRA All Rights Reserved

4ण प्रदर्शन.प्रियता रू जालपा प्रदर्शन.प्रियता स्त्री है। वह गहनों के न होने की वजह से घर से बाहर जाना नहीं चाहती लेकिन जब गहने बन गए तो उसे घर में बैठना अच्छा नहीं लगता। वह मुहल्ले में जाने लगी तथा अपने रूप.लावण्यए वस्त्र.आभूषण आदि से शीघ्र ही स्त्रियों में सम्मान पा लिया। कभी.कभी वह स्त्रियों को गंगा स्नान करने ले जातीए ताँगे का किराया तथा गंगा तट पर जलपान का खर्च भी स्वयं हीं करती। इसके विपरीत रतन प्रदर्शन.प्रियता से कोसो दूर है तथा उसे न ही स्वयं के धनी होने का घमंड है। वह दयालुता तथा उदारता की मूर्ति है। वह सभी की धन से तथा मन से मदद करती है। जोहरा के साथ भी जालपा मित्र जैसा व्यवहार करती है।

5ण स्वाभिमान रू जालपा स्वाभिमानी युवती है। उसकी यह भावना आदि से अंत तक देखी जा सकती है। वह अपने माँ के द्वारा दिये गए चन्द्रहार के लेने से मना करती हुई कहती है.ष्दान भिखारियों को दिया जाता है। मैं किसी का दान न लूँगीए चाहे वह माता ही क्यों न हो।ष्6

वह ऐसा स्वामिभान रमानाथ में भी चाहती है। रमानाथ तीन महीने तक देवीदीन के घर रहता है तथा धन.लालच में झूठी गवाही देता है तो वह उसे डाँटती हुई कहती हैए ष्तुम्हारा धन और वैभव तुम्हें मुबारक होए जालपा उसे पैरों से ठुकराती है।ष्7 निम्न पंक्तियाँ में भी जालपा का स्वाभिमान झलकता है . ष्ओहए तुम इतने धन.लोलुप होए इतने लोभी! कोई हरज नहीं। जालपा अपने पालन और रक्षा के लिए तुम्हारी मुहताज नहीं।ष्8

रतन भी स्वामिमानी युवती है। जब मणिभूषण उसके पति की मृत्यु के बाद उसकी सारी सम्पत्ति हड़प लेता है तो वह न तो झूठ बोलकर अपनी सम्पत्ति वापिस लेना चाहती है और न ही किसी से दया की भीख माँगती है। मणिभूषण द्वारा दिये गए कमरे को ठुकरा कर छोटे से कमरे में रहना पसंद करती है। रतन कहती हैए ष्मैं कुछ नहीं चाहती। मैं इस घर का एक तिनका भी अपने साथ न ले जाऊगी। जिस चीज पर मेरा कोई अधिकार नहींए वह मेरे लिए वैसी ही हैए जैसी किसी गैर आदमी की चीज। ष्मैं दया की भिखारिणी न बनूँगी।ष्9 रतन को एक विधवा के रूप में चित्रित किया गया है। वकील साहब की मृत्यु के बाद उसका भतीजा मणिभूषण उसकी सारी सम्पत्ति पर अधिकार कर लेता है। उसका बंगला भी बेच देता है। मणिभूषण का यह कथन विधवा की दयनीय स्थिति को उजागर करता है। ष्सम्मिलित परिवार में विधवा का अपने पुरुष की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं होता।ष्10

जोहरा एक वेश्या का जीवन जीती है। लेकिन फिर भी वह दरोगा के कहे जाने के अनुसार न चलकर रमानाथ की मदद करती है तथा रमानाथ का जालपा के लिए प्रेम देखकर जरा भी ईर्ष्या नहीं करती।

बुद्धिमत्ता रू जालपा एक बुद्विमती युवती है। जब रमानाथ घर से भाग जाता है तो वह धैर्यपूर्वक कार्य करती है तथा स्थिति को समझ कर अपने गहने बेचने में जरा भी नहीं हिचकती। वह गहने बेचकर दफ्तर में रुपये जमा कराकर रमानाथ को गबन के आरोप से बचा लेती है। जब रमानाथ घर से भाग जाता है तो वह पहेली के माध्यम से रमानाथ को ढूँढ कर कलकत्ता पहुँच जाती है। अपने अथक प्रयास से जालपा रमानाथ के झूठी गवाही न देने के लिए मनवाकर उसे सब आरोपों से बरी करवाया। इसके विपरीत रतन ने अपने पति के मृत्यु के बाद बुद्विमता से कार्य न किया। जिसके कारण मणिभूषण उसकी सारी सम्पत्ति हड़प लेता है तथा बंगला भी बेच देता है और वह निसहाय जीवन व्यतीत करने को मजबूर हो जाती है। जोहरा भी बुद्विमती युवती है। अपनी बुद्विमत्ता के कारण वह दरोगा से रमानाथ को बचाती है। जालपा से भी मिलती है तो स्वयं को यूनिवर्सिटी की छात्रा बताती है तथा जालपा का सारा हाल रमानाथ को बताती है। जालपा को अपनी बातों में लेंकर उसके मुख से सारी बातें जान लेती है।

© 2014 IJRRA All Rights Reserved

7ण सद्गुण रू जालपा में सद्गुणों की कमी नहीं है। वह कभी किसी का बुरा नहीं सोचती तथा रमानाथ को भी बुरा नहीं करने देती है। वह रतन के पैसे भी लौटा देती है तथा रमानाथ को अधिक खर्च करने से भी मना करती है तथा कहती है. ष्नहींए मेरे लिए कर्ज लेने की आवश्यकता नहींए मैं वेश्या नहीं हूँ कि तुम्हें नोंच.खसोटकर अपना रास्ता लूँष्11 वह दिनेश के परिवार की सहायता करके रमानाथ के पापों का प्रायश्चित करती है। जब उसे पता चलता है कि रमानाथ की झूठी गवाही से बेकसूर लोगों को सजा हुई है तो वह उससे अपना नाता तोड़ लेती है। उसके धन को ठुकरा देती है और कहती हैए ष क्या तुम इतने गये.बीते हो कि अपनी रेटियों के लिए दूसरो ंका गला काटोध् मैं इसे नहीं सक सकती। मुझे मजदूरी करनाए भूखों मर जाना मंजूर है। बड़ी से बड़ी विपत्ति जो संसार में हैए वह सिर पर ले सकती हूँए लेकिन किसी का अनभल करके स्वर्ग का राज भी नहीं ले सकती।ष12

रतन तथा जोहरा भी सद्गुणों से युक्त है। जोहरा अपने पेशे के विपरीत व्यवहार करती है तथा रमानाथ और जालपा की मदद करती है। रतन भी दीन.दुखियों की मदद करती है। बच्चों से प्रेम करती है। जालपा के कंगन खरीदकर भी रतन उसकी मदद करती है।

8ण दोहरा व्यक्तित्व रू जालपा का दोहरा व्यक्तित्व दिखाई देता है। जो पहले वह आभूषण प्रेमी तथा प्रदर्शन प्रेमी थीए उस व्यवहार को छोड़ कर वह अपने कर्तव्य का पूर्णतया निर्वाह करती है। रमानाथ की अनुपस्थिति में सास.ससुर की सेवा करती है। कलकत्ता पहुँच कर जग्गो तथा देवीदीन के प्रति अपने कर्तव्य को निभाती है। दिनेश के घर जाकर उसके परिवार की देखरेख करती है। जालपा बच्चों का ध्यान रखती हैए बुढ़ी माँ के पाँव दबाती हैए पानी भरकर लाती हैए बरतन साफ करती है तथा पूर्ण श्रद्धा से अपना कार्य करती है। यह व्यवहार उसके पहले व्यवहार के विपरीत है। इस कार्य से उसका देवी रूप अवतरित हुआ है। वह स्वयं को इनका दोषी समझकर तथा रमानाथ के कुकृत्यों का पश्चाताप करती है। उसके इस रूप को देखकर जोहरा उसकी कायल हो जाती है तथा स्वयं पर लज्जा महसूस करती हुई कहती हैए ष्जालपा का त्यागए सेवा और साधना देखकर इस वेश्या का हृदय इतना प्रभावित हो जाता है कि वह अपने जीवन पर लज्जित होती है।ष्13 जोहरा भी दिनेश के घर जालपा की मदद करके आत्मसन्तुष्टि महसूस करती है तथा जालपा के विषय में सोचती हैए ष्उनकी इस बेगरज खिदमत के सामने मुझे अपनी जिन्दगी कितनी जलीलए कितनी काबिले.नफरत मालूम हो रही थीछष्14 जौहरा ने जालपा तथा रमानाथ के साथ रहकर स्वयं को बदल लिया तथा वेश्यावृति छोड़कर उनके साथ रहने लगी।

रामेश्वरी रमानाथ की माँ है। वह भी आभूषण प्रेमी है लेकिन वह अपने घर की वास्तविकता जानती है तो वह रमानाथ से कंगन लेने को मना कर लेती है। वह दयानाथ को भी विवाह में फिजूलखर्ची के लिए मना करती है तथा जलपा को भी कोसती है। वह समझदार तथा यथार्थ में जीने वाली स्त्री है।

अतः जालपा का चित्रण सभी पात्रों में अधिक प्रभावशाली है। वह उदार ह्रदयीए बुद्धिमती तथा स्वाभिमानी युवती है। उसकी आभूषण.प्रियता समय आने पर त्याग करने की भावना में बदल जाती है। वह सत्य एवं न्याय के लिए सब कुछ करने को तत्पर रहती है तथा विकट परिस्थितियों में बिना घबराये उनका मुकाबला करने का साहस रखती है। रतन तथा जोहरा भी अपनी परिस्थितियों के अनुकूल व्यवहार करती है। स्त्री ही सहनशीलता तथा त्याग की देवी है। वक्त आने पर स्त्री अपना तथा अपने परिवर को विकट परिस्थितियों से बचाती है तथा यह स्वीकार करती है कि पति.पत्नी में निष्कपट व्यवहार होने से ही गृहस्थ जीवन सुखपूर्वक व्यतीत हो सकता है।

संदर्भ

1ण प्रेमचन्द ष्गबनष् मनोज पब्लिकेशन्सए दिल्लीए संस्करण 2000ए पृ0 47

2ण वहीए पृ॰. 69

3ण वहीए पृ॰. 55

4ण वहीए पृ॰.137

5ण वहीए पृ॰. 60

6ण वहीए पृ॰. 33

7ण वहीए पृ॰. 200

8ण वहीए पृ॰. 200

9ण वहीए पृ॰. 195

10ण वहीए पृ॰. 193

11ण वहीए पृ॰.38

12ण वहीए पृ॰. 187

13ण वहीए पृ॰. 233

14ण वहीए पृ॰. 221

IJRRA

© 2014 IJRRA All Rights Reserved